मोड़

मृत्यु से मित्रता का मंत्र

हम स्वयं जीकर जीवन को सीख और सिखा सकते हैं और मृत्यु से मित्रता भी कर सकते हैं, परंतु किसी को मृत्यु ऐसे नहीं सिखा सकते जैसे जीना। काशी में मुक्ति विषयवस्तु पर लिखे गए उपन्यास 'काशी मरणान्मुक्ति' में भी इस संदेश को कथासूत्र के रूप में पेश किया गया है

■ डॉ. उपेंद्र

सृजन

उपन्यास	: काशी मरणान्मुक्ति
लेखक	: मनोज ठाकर और रश्मि छाजेड़
प्रकाशक	: शिव ॐ साई , इंदौर
मूल्य	: 501 रुपये

ट्विटर पर उपन्यास। फेसबुक पर झलक। वाक्य-संदर्भ की पुनरावृत्ति के अब तक के सारे रिकॉर्ड तोड़ता अपनी तरह का अनोखा उपन्यास, जिसमें पूरे 69 बार उद्घोष होता है- 'पर याद रख पी तेरा गुरु नहीं।' हर बार नया संदर्भ और अगले उद्घोष की उत्कंठा-सी जगाती। जैसा उपन्यास का नायक अनोखा वैसा ही दुनिया से इस रचना का परिचय भी। लीक से हटकर विषयवस्तु वाले इस उपन्यास के जन्म का उद्घोष भारत में ट्विटर के अग्रज पूर्व केंद्रीय मंत्री शशि थरूर के ट्वीट पर हुआ। विमोचन भी उन्हीं के हाथों। रोचक है कि वेद पुराण, आगम-निगम, बौद्ध, जैन, तुलसी के राम से कबीर और रैदास के राम तक काशी से जुड़े अब तक के संपूर्ण वांग्मय को आत्मसात करने को आतुर इस उपन्यास का आधुनिक जगत से परिचय ट्विटर के माध्यम से हुआ- 'ट्वीट अबाउट [illegible] वर्ल्ड ऑफ ए चांडाल ([illegible]) इन बनारस।'

मृत्यु से मित्रता का संदेश देते मनोज ठक्कर और रश्मि छाजेड़ के उपन्यास 'काशी मरणान्मुक्ति' का पहला पैरा उपन्यास के कथ्य की एक झलक दे जाता है- 'यह काशीविश्वनाथ निर्मित योग ही था कि कालखंड के इस क्षण काशी के महाश्मशान मणिकर्णिका पर अपने [illegible] के द्वारा [illegible] गंगा को खोलते, एक शव को मुक्ति प्रदान करने के लिए बाबा विश्वनाथ शव के कान में तारकमंत्र को फूंकते, फलामऊ कस्बा पर दृष्टि डालते विमान फैला रहे थे। उधर कालखंड के उसी क्षण फलामऊ कस्बे में, अर्द्धरात्रि के इस प्रहर एक अभागन माँ ने अपने नवजात शिशु को गंगा किनारे स्थित श्मशान में चिताग्नि के पास छोड़ दिया था।' किसी कालखंड में काशी के महाश्मशान से प्रयाग के निकट अवस्थित फलामऊ के श्मशान तक व्याप्त शिवदृष्टि का दृश्य जीवंत करता यह अंश पूर्वपीठिका है रहस्य-रोमांच से भरी यात्रा की। यात्रा बाह्य जगत और अंतर्मन की।

कबीर को समझने वाले यदि महा को न समझें तो परमात्मा के रहस्य को नहीं समझ सकते। कभी कबीर तो कभी शिवांश। कबीर को चाहने वाले यदि महा को न चाहें तो मुक्ति कोसों दूर है। 'काशीमरणान्मुक्ति' का नायक महा जन्मना ब्राह्मण है, संतान एक वणिक और ब्राह्मणी का। कबीर ब्राह्मणी पुत्र थे। लहरतारा तालाब के तट पर त्यक्त। महा की माँ ने उसे प्रयाग निकटस्थ फलामऊ के श्मशान पर त्यागा। कबीर को जुलाहा नीरू और नीमा ने पाला। महा के पालक भी मल्लाह दंपति यशोदा-राघव हैं, किंतु ये बालक को प्राप्त होते ही काशी विस्थापित होकर शरण लेते हैं एक मुस्लिम के घर। महा के यही इस्माइल चाचा बालक को समस्त धर्मों और संस्कृति-संस्कार से परिचित कराते हैं। साम्य कबीर का किंतु उपन्यास काशी में मुक्ति की विषयवस्तु पर केंद्रित है। इसलिए श्मशान पर जन्मे महा को अंतःप्रेरणा से ही सही बनना चांडाल ही था। नामकरण प्रसंग को छोड़ कहीं भी महा को पूरे नाम महामृत्युंजय से न पुकार, सिर्फ महा ही कहा गया। महा ही मणिकर्णिका के चांडाल प्रमुख का प्रचलित संबोधन भी तो है। उपन्यास का संदेश है कि स्वयं जीकर जीवन तो सीख सकते हैं, दूसरों को सिखा भी सकते हैं और साथ ही मृत्यु से मित्रता भी कर सकते हैं। परंतु किसी को मृत्यु ऐसे नहीं सिखा सकते जैसे जीना। प्र.ज. (फलामऊ) में जन्मे 'महा' ने पूरा जीवन भले ही काशी में [illegible] हो पर शिवस्वरूप गुरु की [illegible] से काशी छोड़ [illegible] और तीर्थों की सुदीर्घ यात्रा के पश्चात वह भी शिवजी की ही भांति दोबारा काशी लौटता है और तीर्थयात्रा के दौरान अर्जित आत्मज्ञान व पौराणिक के ज्ञान से प्राप्त करता है मृत्यु-आनंद। मृत्यु के साथ ही काशी विश्वनाथ के कर्णपूजा मंत्र के ज्ञान से एक चांडाल को मुक्ति होती है। उसे शिवधाम की प्राप्ति होती है। काशी मरणान्मुक्ति तो ऐसी स्थिति है, जो किसी अज्ञात गुफा में छिपी बैठी है और किसी के लिए वह यहां से निकल स्वप्रकाश में अभिव्यक्त हो उठती है। द्वादश ज्योतिर्लिंग, चार धाम, काशी की पंचकोसी और पंचतीर्थ यात्रा-वास्तव में संसारियों के लिए भले ही यह शक्ति प्राप्त करने की यात्राएं हों, परंतु साधक के लिए तो यह स्वयं के अंदर की यात्रा है। शिवजी से जुड़े एक-एक पक्ष पर [illegible] दृष्टिगत उपन्यास का सबल पक्ष है। यथा- 'सृष्टि और प्रलय के संतुलन की परिभाषा शिव परिवार के सदस्यों के वाहनों पर दृष्टि डालने मात्र से ही स्वतः परिभाषित हो जाती है। गणेशजी का वाहन मूषक है तो कार्तिकेय मयूर पर सवार दिखाते हैं एवं नाग शिव की शोभा बढ़ाते हैं। कौन कहता है कि नाग, मूषक को निगल जाता है एवं मयूर, नाग को स्वयं के आहार के रूप में ग्रहण करता है? एक ओर माँ भवानी, सिंह पर सवार हैं तो उन्हीं के साथ सदैव भ्रमण करते भोलेनाथ, वृषभ की सवारी करते शोभायमान होते हैं। कहां सिंह और कहां नंदी। फिर भी दोनों का शिवशक्ति के साथ एकात्म।'

इंदौर से काशी आकर 'काशी मरणान्मुक्ति' के रचयिता द्वय मनोज ठक्कर और रश्मि छाजेड़ भी श्रद्धा और विश्वास से ओतप्रोत नजर आते हैं। उनकी काशी मरणान्मुक्ति की अवधारणा में अगाध विश्वास है कि सत्य की सनातन रसधार की बूंदें इस पुस्तक के माध्यम से बाहर आकर पाठकों को अवश्य ही आंदोलित करेंगी और उन्हें कुछ नया देंगी। उपन्यासकार द्वय स्वयं स्वीकारते हैं कि कथा में जितना कथ्य है उससे कई गुना अधिक अकथ्य। जहां शिव पुराण इस कथा की रीढ़ की हड्डी है, वहीं अन्य पुराण इसके अंग-प्रत्यंग। स्व. मुंशी प्रेमचंद की पत्रिका 'हंस' के कुछ लेखों से मिली जानकारियों ने भी इसकी सुंदरता को बढ़ाया है। उपन्यास के कथ्य पर शिक्षा और सत्यान्वेषण का संदेश हावी है। इससे कई बार कथा की गति बाधित होती है, आध्यात्मिक पैठ न रखने वाला पाठक कई पन्ने पलट कथा के सूत्र तलाशने को विवश नजर आता है। हां, काशी में मुक्ति की अवधारणा के जिज्ञासु को उपन्यासकार द्वय कतई निराश नहीं करते।

@ सोशल मीडिय

ब्लॉगिंग का भ